7 री! मेरे घट ज्ञान घनागम छायो...

री! मेरे घट ज्ञान घनागम छायो.....
शुद्ध भाव बादल मिल आये, सूरज मोह छिपायो।।री.।।टेक।।

अनहद घोर घोर गरजत हैं, भ्रम आताप मिटायो।
समता चपला चमकनि लागी,
अनुभौ–सुख झर लायो।।री.।।१।।

सत्ता भूमि बीज समकितको, शिवपद खेत उपायो।
उद्धत भाव सरोवर दीसै, मोर सुन हरषायो।।री.।।२।।

भव–प्रदेशतैं बहु दिन पीछैं, चेतन पिय घर आयो।
'द्यानत' सुति कहै सखियनसों,
यह पावस मोहि भायो।।री.।।३।।

हे सखी! मेरे हृदय में ज्ञान का घन छा गया हैं। ऐसा लग रहा हैं कि मानो शुद्धभाव के बादल छा गये हैं और इस कारण से मोहरुपी सुर्य दिखाई नहीं दे रहा हैं।।टेक।।

शुद्धभाव रुपी बादलों की गर्जना से मिथ्या भ्रम की तपन समाप्त हो गई हैं। ऐसा प्रतीत होता हैं कि समता रुपी बिजली चमक रही हैं और आत्म अनुभव के सुख की बारिश हो रही हैं।।१।।

हे सखी! श्रद्धा की भूमि पर सम्यक्त रुपी बीज के द्वारा मोक्ष महल प्राप्त होने वाला हैं एवं आतमा के पवित्र परिणामों का सरोवर देखकर मानो मन रुपी मोर हर्षित हो रहा हैं।।२।।

कविवर द्यानतरायजी कहते हैं कि आत्मपरिणाम अपने सहेली से कहती हैं कि हे सखी! प्रिय जीव संसार के भाव को छोड़कर अब अपने घर आया हैं। यह बारिश का माह मुझे बहुत सुहा रहा हैं।।३।।